बेहद का वैराग्य - 14

अव्यक्त बापदादा :- (18. 01. 1998)

➳ _ ➳ बापदादा एक बात का फिर से अटेन्शन दिला रहे हैं कि वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेलेपन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज्यादा साधन हैं।

➳ _ ➳ साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है। इसलिए **बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अन्डरलाइन करा रहे हैं - कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना।** ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। **होते हुए दूर रहना - उसे कहेंगे वैराग्य।** लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। **सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो।**

➳ _ ➳ जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्टी में पड़े हुए थे। **यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था।** बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राहमणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना!

➳ _ ➳ तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रहमा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। **अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य।** सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बेहद का वैराग्य बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और संबंध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएं।

➳ _ ➳ इसके लिए **एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे।** उन्हों की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल

आवश्यक है। **अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है।** अभी मन्सा सेवा अर्थात् **संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो**, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पॉवरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति।

➽ _ ➽ तो आज के दिन का **बाप समान बनने का पाठ पक्का करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा।** अभी क्या याद रखा? कौन सी बात को अन्डरलाइन किया? बेहद का वैराग्य। अभी आत्माओं को इच्छाओं से बचाओ। बिचारे बहुत दु:खी हैं। बहुत परेशान हैं। तो अभी रहमदिल बनो। रहम की लहर बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा फैलाओ। अभी सभी ऊंचे ते ऊंचे परमधाम में बाप के साथ बैठ सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो। वायब्रेशन फैलाओ। फैला सकते हैं ना? तो **बस अभी परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। वहाँ से यह बेहद के रहम का वायुमण्डल फैलाओ।** (बापदादा ने ड्रिल कराई)

अव्यक्त बापदादा :- (18. 01. 1999)

➽ _ ➽ अभी भी वैराग्य वृत्ति नहीं आई है, इसमें बापदादा भी देख रहे हैं, कब बेहद का वैराग्य आरम्भ होता है। अभी तो साधन यूज़ करने के अनुभवी ज्यादा हैं। बापदादा जानते हैं कि **जब तक ब्राह्मणों में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज नहीं हुई है तो विश्व में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती। सारे विश्व में वैराग्य वृत्ति ही कुछ पापों से मुक्त करेगी। अभी शक्ति सेना को रहम आना चाहिए।** अभी रहम कम है, सेवा है। लेकिन रहमदिल, वह अभी ज्यादा इमर्ज चाहिए। पाप कर्म का बिचारे बोझ उठाते जाते हैं। बोझ से झुकते जा रहे हैं। तो रहम आना चाहिए, तरस आना चाहिए।

➢➢ **एक आत्मा का (मनोज भाई का) विश्व रत्न दादा के साथ का अनुभव**

➽ _ ➽ **दादा बहुत सिम्पल थे त्यागी तपस्वी थे**

➽ _ ➽ दादा कभी सेवा लेते नही थे व खुद की सेवा खुद करते थे

➽ _ ➽ **विश्व रत्न दादा आदि रत्न मे से थे बाबा के अनन्य रत्न थे**

➽ _ ➽ **उन्होने शुरू मे मुख्य चार चित्र झाड गोला सृष्टिचक्र त्रिमूर्ति बनाए थे**

➽ _ ➽ बाबा ने बोला बच्चे ये आपको बनाना है कैसे बनाना उन्हे आता नही था

→ उन्हे आर्ट नही आता था पर बाबा के प्रति अटूट निश्चय था

→ बाबा ने बोला तो झाड गोला सृष्टिचक्र त्रिमूर्ति के चित्र उन्होने बनाए

➽ _ ➽ **दादा किसी से कोई गलती होती है तो इतने प्यार से और इतना युक्ति से समझाते थे**

→ **सोलह कला सम्पूर्ण बनना है तो हर काम एक्यूरेट और परफेक्ट करो**

→ कोई भी काम मे जरा सा भी डिफेक्ट नही होना चाहिए

→ **और कोई काम चाहे कितना साधारण हो तो किसी का संकल्प भी नही चलना चाहिए**

- अलमारी मे कपडे रखेंगे तो इतनी व्यवस्था से

- **चल भी रहे तो ऐसे जैसे फरिश्ता एकरस**

➳ _ ➳ **उनका बाबा से, यज्ञ से, सेवा से बहुत प्यार था**

➳ _ ➳ दादा अकेले होते तो गीत गाते रहते थे

→ **बाबा तेरा बनने मे सुख है इलाही है..**

→ **बाबा आपने तो कमाल कर दिया जीवन खुशहाल कर दिया..**

➳ _ ➳ दादा यज्ञ का बैंक का सारा एकाऊंट देखते थे

➳ _ ➳ दादा मुरली बाबा डायरी मे नोट करते थे और तीन चार बार पढते थे कम से कम

➳ _ ➳ दादा ने जब शरीर छोडा तो उससे आधा घंटा पहले मुरली नोट किया और सिंधी मे लिखते थे

→ उसी दिन जब ऊपर आ रहे थे शांति वन से तो रास्ते मे भी सब को बोलते कि ऊपर जाना है ऊपर जाना है सबको हाथ हिलाते ऊपर जाना है

→ उस दिन दो बजे दादा ऊपर उठ गए व फिर बाबा के कमरे मे योग किया व फिर पूरा शांति वन मे चक्कर लगाया

→ डायमण्ड हाल का चक्कर लगाकर सबसे हाथ मिलाते हुए जैसे दादा सब छुटी ले रहे हो

➳ _ ➳ उस दिन दादा ने दोपहर मे एक बजे शरीर छोडा

➳ _ ➳ **दादा इतना योगी थे सबसे क्लीयर छुट्टी लेकर गये**

➳ _ ➳ दादा बहुत छोटी छोटी बातो पर अटेंशन रखते

→ **देखो बाबा को सामने देखो कैसे देख रहे है कैसे चल रहे है**

→ **बस बाबा को फालो करना है**

➳ _ ➳ बडी दादी प्रति बहुत रिकार्ड था बडी दादी ब्रहमा बाप समान है व बहुत ऊंची नजर से देखते थे

➳ _ ➳ दादा को क्रिकेट खेलने का बहुत शौक था

→ दादा इतनी अच्छी बेटिंग बोलिंग करते थे एक भी बाल छोडेगे नही

→ इतना अच्छा लगता था रोज आधा घंटा सुबह शाम दादा के साथ ऐसे जाता था

→ **ऐसा लगता था जैसे बाबा के साथ खेल रहे है**

➽ _ ➽ क्लास मे उनकी दो तीन बात पक्की थी

→ **बाबा मेरे साथ है**

→ **बाबा मुझे देख रहा है**

→ **बाबा मुझे चला रहा है**

➽ _ ➽ लास्ट मे दादा बिल्कुल बच्चे जैसे हो गए थे और उपराम हो गए थे

➽ _ ➽ **दादा का मुरली से बहुत प्यार था**

→ दादा एक बार ऊपर से कमरे उतर कर नीचे आया झोपडी के पास से

→ और मैं झोपड़ी के पास योग करने जा रहा था हाथ पकडकर पूछा आज मुरली पढा है

→ **और कहा मुरली का एक एक शब्द धारण कर लो तो सम्पूर्ण बन जायेंगे**

➽ _ ➽ दादा का स्लोगन पक्का था

→ **कोई भी चीज मांग कर नही लाना**

→ **मांग कर लाने से मर जाना अच्छा है**

➽ _ ➽ दादा डिस्पेनसरी की सेवा में पहले इन्जेक्शन लगाते थे

➽ _ ➽ दादा खेलने मे भी बहुत मस्त था पीस पार्क मे फुटबाल भी खेलते थे

→ मजाल है कि बाल छूट भी जाए

➽ _ ➽ **दादा जो भी काम करते थे एक्यूरेसी से**

➽ _ ➽ हर बात ऐसी देते थे कभी भूल ही नही सकता था व्यक्ति

→ कोई भी बात बाबा देख रहा है ऐसे इतनी क्लीयर करके समझाता था कि वो भूल ही नही सकता था

➽ _ ➽ दादा ने यज्ञ का हर काम किया

➽ _ ➽ **दादा की विशेषता ये है जितना प्यारा है उतना न्यारा भी है**

→ **जितनी रमणीकता है उतनी हर्षितमुखता भी**

→ हर प्रकार के हर गुण

➳ _ ➳ दादी के कमरे मे दादा जाता था

→ दादी आइये बैठो दादा हमारे साथ बैठो

➳ _ ➳ उनका बडो के प्रति कितना रिस्पेक्ट रिगार्ड है